The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता एवं महत्व: वर्तमान प्रासंगिकता

Sarita Kumari[1], Prof. Sarfaraz Ahmad[2] & Pawak Agrawal[3]

[1]Research Fellow, Department of Teacher Education, Halim Muslim PG College affiliated to Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat; ORCID- https://orcid.org/0009-0003-9425-5812

[2]Professor, Department of Teacher Education, Halim Muslim PG College affiliated to Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat; E-mail- dr.sarfarazahmad1994@gmail.com

[3]Senior Research Fellow, Department of Education, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat; ORCID- https://orcid.org/0009-0002-6946-5001

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22098068

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 21-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

व्यावसायिक स्वावलंबन, उद्यमशीलता शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, कौशल विकास

ABSTRACT

वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में उच्च शिक्षा के बाद भी बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बनी हुई है, जिसके कारण विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो गई है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता एवं महत्व का व्यापक एवं गहन विश्लेषण करना है। यह अध्ययन गुणात्मक अभिलेखीय विश्लेषण एवं वर्णनात्मक साहित्य समीक्षा पद्धति पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में यह रेखांकित किया गया है कि वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, कोविड-19 महामारी के प्रभाव और 'कौशल-बाजार बेमेल' जैसी चुनौतियों ने स्वावलंबन को एक वैकल्पिक मार्ग से एक अनिवार्य आवश्यकता में रूपांतरित कर दिया है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के उद्घोष के अनुरूप, व्यावसायिक शिक्षा का मुख्यधारा में एकीकरण विद्यार्थियों को 'रोजगार चाहने वालों' से 'रोजगार प्रदाता' बनाने का आधार सिद्ध हो सकता है। शोध यह भी स्पष्ट करता है कि विद्यालय, परिवार एवं समाज की भूमिका स्वावलंबन के विकास में निर्णायक है, जबकि वित्तीय अभाव,

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

बाजार अनिश्चितता, लैंगिक बाधाएँ और पारिवारिक प्रोत्साहन का अभाव प्रमुख बाधाएँ हैं। अंत में, नीतिगत एवं व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जो शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम नवीनीकरण और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण पर केंद्रित हैं, ताकि विद्यार्थी व्यावसायिक रूप से स्वावलंबी बन सकें और राष्ट्रीय आर्थिक विकास में योगदान दे सकें।

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्वीकरण, तीव्र तकनीकी परिवर्तन और कोविड-19 महामारी के पश्चात उत्पन्न आर्थिक अनिश्चितता ने विश्वभर में रोजगार के पारंपरिक प्रतिमानों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश किया है। विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देशों में, जहाँ एक बड़ी जनसंख्या युवा वर्ग से निर्मित है, स्नातक बेरोजगारी की समस्या एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक चुनौती बनकर उभरी है। उपलब्ध शोध साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी की समस्या चिंताजनक बनी हुई है, जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली और रोजगार बाजार की माँग के बीच विद्यमान खाई को रेखांकित करती है, और नीतिगत स्तर पर इसके क्रियान्वयन में विलंब को भी प्रतिबिंबित करती है (Agrawal & Bhatt, 2023)। यह 'कौशल-बाजार बेमेल' विद्यार्थियों को आर्थिक निराशा और सामाजिक हताशा के दोहरे दबाव में डालता है। इस संदर्भ में, व्यावसायिक स्वावलंबन की अवधारणा न केवल एक वैकल्पिक करियर मार्ग के रूप में, बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में सामने आई है (Magasi, 2022)। राल्फ वाल्डो इमर्सन के दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, आधुनिक शैक्षणिक चिंतकों ने स्वावलंबन को व्यक्ति की उन आंतरिक क्षमताओं के रूप में परिभाषित किया है जिसके माध्यम से वह बाहरी निर्भरता से मुक्त होकर स्वयं के प्रयासों और मौलिक विचारों से एक स्वतंत्र एवं संधारणीय आर्थिक इकाई का निर्माण करता है (Alam et al., 2021)। भारत सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान ने इस दृष्टिकोण को और बल दिया है, जिसका लक्ष्य देश को 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी देने वालों' का राष्ट्र बनाना है (NITI AAYOG, 2020)। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) ने व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में एकीकृत करने की वकालत की है, ताकि विद्यार्थी अपनी जन्मजात प्रतिभाओं को पहचानकर आत्म-निर्भर बन सकें (Government of India, 2020; Kumar et al., 2026)। प्रस्तुत शोध पत्र विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता एवं महत्व का गुणात्मक विश्लेषण करता है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य; विद्यालय, परिवार एवं समाज की भूमिका; विद्यार्थियों के अनुभव; चुनौतियाँ एवं बाधाएँ; तथा नीतिगत सुझावों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

आवश्यकता एवं महत्व

व्यावसायिक स्वावलंबन का महत्व केवल व्यक्तिगत आय सृजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय आर्थिक संवृद्धि, समावेशी विकास और सतत जीवन-यापन का भी मुख्य चालक है। जब विद्यार्थी स्वयं के व्यवसायिक उद्यम से जुड़ते हैं, तो वे न केवल अपने लिए रोजगार का सृजन करते हैं, बल्कि अन्य व्यक्तियों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं, जो एक गुणक प्रभाव उत्पन्न करता है (Edokpolor, 2020)। सतत विकास के दृष्टिकोण से, व्यावसायिक स्वावलंबन विद्यार्थियों को 'सामाजिक दासता' से मुक्त कर उन्हें मानवीय गरिमा, आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करता है (Grudens-Schuck et al., 2003)। यह विद्यार्थियों को अब्राहम मैस्लो की 'आत्म-वास्तविकीकरण' की अवधारणा के अनुरूप अपनी पूर्ण मानवीय क्षमता के उच्चतम स्तर तक पहुँचने का अवसर देता है (Saibu et al., 2024)। अतः, व्यावसायिक स्वावलंबन एक व्यक्तिगत आर्थिक गतिविधि मात्र नहीं है, बल्कि यह एक सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण और व्यक्तिगत पहचान के पुनर्निर्माण की आधारशिला है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

Leiva-Lugo et al. (2024) के अनुसार 'उद्यमशीलता संबंधी सोच' को एक अनिवार्य सक्षमता माना गया है जो नेतृत्व और सामाजिक प्रभाव वाले रचनात्मक समाधानों को प्रोत्साहित करती है। उनके शोध में 'शिक्षा 4.0' को सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक सक्षमकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो विद्यार्थियों में अनुकूलनशीलता, रणनीतिक सोच और तकनीकी सक्षमता जैसे उप-कौशल विकसित करता है। यह अध्ययन विशेष रूप से वंचित और ग्रामीण समुदायों में 'शैक्षणिक अंतराल' की समस्या को रेखांकित करता है, जहाँ उन्नत प्रशिक्षण प्रणालियों तक पहुँच का अभाव है, और किफायती एवं नवाचार-उन्मुख मॉडलों की आवश्यकता पर बल देता है।

Odor & Nwalado (2026) के अनुसार, व्यावसायिक स्वावलंबन को तकनीकी, उद्यमिता और व्यावसायिक कौशलों के एकीकरण के रूप में परिभाषित किया गया है, जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम बनाता है। उनके अध्ययन में विद्यार्थियों की औद्योगिक कार्य अनुभव योजना (SIWES) जैसे व्यावहारिक उपकरणों की भूमिका को रेखांकित किया गया है जो कक्षा के सिद्धांतों और वास्तविक उद्योग प्रथाओं के बीच के अंतराल को पाटते हैं। यह अध्ययन पुष्ट करता है कि व्यावहारिक प्रशिक्षण से समस्या-समाधान क्षमता और व्यावसायिक सृजनशीलता में वृद्धि होती है, हालांकि अपर्याप्त वित्तपोषण, सीमित प्रशिक्षण अवधि और कमजोर परामर्श व्यवस्था जैसी संरचनात्मक बाधाएँ इस प्रक्रिया को बाधित करती हैं ।

Magasi (2022) ने 'नियोजित व्यवहार के सिद्धांत' के माध्यम से उद्यमशीलता की आकांक्षाओं को समझने का एक आधारभूत ढाँचा प्रदान किया है। उनके शोध में यह स्पष्ट किया गया कि व्यावसायिक स्वावलंबन की मंशा केवल पारंपरिक ज्ञान-आधारित शिक्षण से नहीं, बल्कि सक्षमता-आधारित प्रशिक्षण, व्यक्तिगत गुणों (सृजनात्मकता,

जोखिम लेने की प्रवृत्ति, आत्म-प्रभावकारिता) और सामाजिक समर्थन (रोल मॉडल, सरकारी नीतियाँ) के समन्वय से निर्मित होती है। यह सिद्धांत व्यावसायिक स्वावलंबन को एक 'नियोजित व्यवहार' के रूप में दर्शाता है जो दीर्घकालिक योजना, अनुभव और सहायक पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा संचालित होता है।

Kumar et al. (2026) ने अपने अध्ययन में यह विश्लेषण किया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 किशोर विद्यार्थियों में रोजगारोन्मुख शिक्षा के संवर्द्धन में किस प्रकार केंद्रीय भूमिका निभाती है। उनके अध्ययन में कक्षा 6 से 8 के स्तर पर 'बस्ता-रहित दिवसों' के माध्यम से स्थानीय शिल्पकारों के साथ इंटर्नशिप, 'हब एवं स्पोक मॉडल' के माध्यम से कौशल प्रयोगशालाओं का विस्तार, 'लोक विद्या' के माध्यम से पारंपरिक भारतीय ज्ञान का समावेशन, तथा राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (NSQF) के साथ संरेखण जैसे ठोस संरचनात्मक प्रावधानों को रेखांकित किया गया है। यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि इन नीतिगत प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन में शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत सार्वजनिक निवेश की कमी, शिक्षक प्रशिक्षण की अपर्याप्तता एवं डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियाँ प्रमुख बाधाएँ हैं।

Araoye et al. (2024) ने डिजिटल उद्यमशीलता कौशल को विद्यार्थियों में स्वावलंबन को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में पहचाना है। उनके अध्ययन ने यह दर्शाया कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, प्रभावी विपणन और सृजनात्मकता जैसे व्यावहारिक कौशल विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी व्यवसाय का संचालन करने के लिए सक्षम बनाते हैं।

Saptono et al. (2021) ने अपने अध्ययन में यह रेखांकित किया कि उद्यमशीलता शिक्षा का विद्यार्थियों की 'आत्म-प्रभावकारिता' पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो व्यवसायिक स्वावलंबन की आकांक्षा का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार है। जो विद्यार्थी अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखते हैं, वे अनिश्चितता के प्रबंधन और जोखिम उठाने में अधिक सफल होते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि शैक्षिक उपलब्धि-अभिप्रेरणा सामान्यतः विद्यालय के प्रकार एवं लिंग जैसे कारकों से प्रभावित होती है, जो अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों में व्यावसायिक आकांक्षाओं की नींव तैयार करने में भी भूमिका निभा सकती है (Sinha & Ahmad, 2007)।

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि विद्यमान अध्ययनों ने व्यावसायिक स्वावलंबन के विभिन्न आयामों; जैसे कौशल विकास, मनोवैज्ञानिक कारक एवं डिजिटल उद्यमशीलता, का पृथक-पृथक विश्लेषण किया है, किंतु भारतीय संदर्भ में विद्यालय, परिवार एवं समाज की सम्मिलित भूमिका तथा NEP 2020 के परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक स्वावलंबन का समग्र गुणात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन का आधार है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की अवधारणा का अन्वेषण करना।

2. वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता का विश्लेषण करना।
3. व्यावसायिक स्वावलंबन के विकास में विद्यालय, परिवार एवं समाज की भूमिका का गुणात्मक विश्लेषण करना।
4. विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों एवं बाधाओं का अन्वेषण करना।
5. विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन को सुदृढ़ करने हेतु व्यवहारिक एवं नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान उपागम पर आधारित है, जिसमें अभिलेखीय विश्लेषण एवं वर्णनात्मक साहित्य समीक्षा पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु गूगल स्कॉलर एवं अन्य मुक्त पहुँच वाले शैक्षणिक डेटाबेस में उपलब्ध मूल शोध-पत्रों, शोध आलेखों तथा प्रासंगिक अकादमिक साहित्य का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया। चयनित साहित्य में विद्यार्थियों के व्यावसायिक स्वावलंबन, कौशल विकास, उद्यमिता शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 से संबंधित अध्ययनों का गहन अध्ययन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया। प्राप्त साहित्य का विषयगत विश्लेषण करते हुए प्रमुख अवधारणाओं, प्रवृत्तियों, चुनौतियों एवं संभावित समाधानों की पहचान की गई। विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों का विश्लेषण एवं संश्लेषण कर विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की वर्तमान आवश्यकता एवं उसके शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक महत्व का समग्र विवेचन प्रस्तुत किया गया। यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

व्यावसायिक स्वावलंबन

व्यावसायिक स्वावलंबन एक ऐसी परिपक्व आर्थिक स्थिति और प्रक्रिया है, जिसमें एक उद्यमी या व्यक्ति अपनी स्वयं की क्षमताओं, संसाधनों एवं निर्णयों पर निर्भर रहकर एक स्वतंत्र व्यावसायिक इकाई का संचालन करने में सक्षम होता है (Araoye et al., 2024)। अकादमिक दृष्टिकोण से, इसे 'आत्मनिर्भरता' के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो किसी व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके माध्यम से वह बिना किसी बाहरी सहायता के अपनी और समाज की आवश्यकताओं को गरिमापूर्ण और स्थायी तरीके से पूर्ण करता है। राल्फ वाल्डो इमर्सन के अनुसार, स्वावलंबन का मूल आधार अपने विचारों, मौलिकता एवं अपनी आंतरिक क्षमता पर पूर्ण विश्वास करना है (Alam et al., 2021)। व्यावसायिक संदर्भ में, यह केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है, बल्कि एक गतिशील और नवाचार-उन्मुख प्रक्रिया है, जहाँ एक उद्यमी जोखिम और अनिश्चितता के वातावरण में संसाधनों को एकत्रित कर एक आर्थिक संगठन का निर्माण करता है। व्यावसायिक स्वावलंबन की प्रभावशीलता मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर टिकी है: प्रथम, कौशल और

सक्षमता जिसमें सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, प्रभावी विपणन और सृजनात्मकता जैसे व्यावहारिक कौशल शामिल हैं (Araoye et al., 2024); द्वितीय, मनोवैज्ञानिक कारक जिसमें 'आत्म-प्रभावकारिता' और लचीलापन अनिवार्य हैं, जो व्यक्ति को असफलताओं से उबरने का आत्मविश्वास प्रदान करते हैं (Kumar et al., 2026); तथा तृतीय, सहायक पारिस्थितिकी तंत्र जिसमें वित्त तक पहुँच, परामर्श और नीतिगत समर्थन की उपलब्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के 'आत्मनिर्भर भारत' दृष्टिकोण के अंतर्गत, व्यावसायिक स्वावलंबन का लक्ष्य देश को 'नौकरी चाहने वालों' के स्थान पर 'नौकरी देने वालों' का राष्ट्र बनाना है (NITI AAYOG, 2020), जो व्यक्ति को उसकी मानवीय क्षमताओं के उच्चतम स्तर तक पहुँचने का मंच प्रदान करता है।

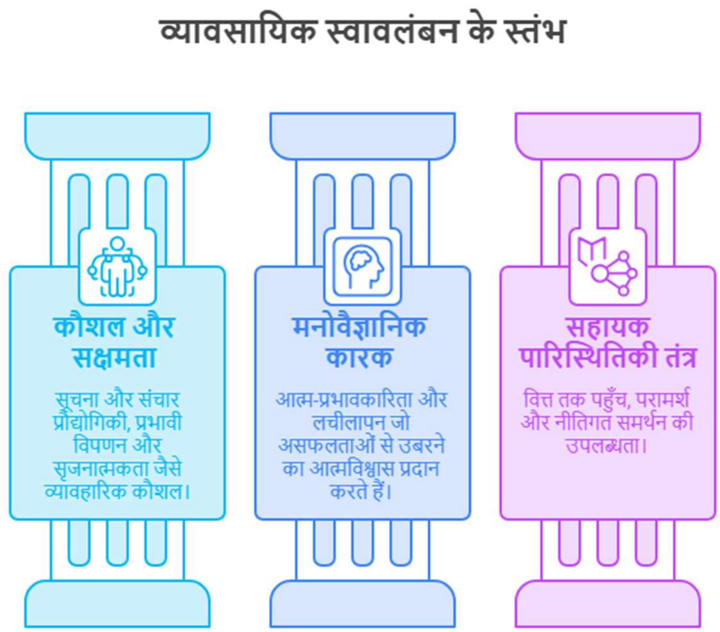

आकृति 1. व्यावसायिक स्वावलंबन के स्तंभ

सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता

वर्तमान सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता बहुआयामी और गहन है। सामाजिक दृष्टिकोण से, भारतीय समाज में परंपरागत रूप से औपचारिक रोजगार को एकमात्र सम्मानजनक जीविकोपार्जन के माध्यम के रूप में देखा जाता रहा है। सरकारी नौकरी या बड़े निजी उद्यमों में स्थायी रोजगार को सफलता का एकमात्र मानदंड माना जाता है, जिसके कारण व्यावसायिक स्वावलंबन की ओर रुझान को अक्सर 'सुरक्षित रोजगार न मिलने की स्थिति' के रूप में देखा जाता है, न कि एक सचेत और सम्मानित करियर विकल्प के रूप में। यह सामाजिक मानसिकता विद्यार्थियों में उद्यमशीलता के बीज बोने में एक प्रमुख बाधा

के रूप में कार्य करती है। आर्थिक दृष्टिकोण से, वैश्वीकरण ने एक ओर नए अवसरों के द्वार खोले हैं, किंतु दूसरी ओर प्रतिस्पर्धा को और तीव्र बना दिया है। छोटे और मध्यम उद्यमों (SMEs) का योगदान भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 30 प्रतिशत और रोजगार सृजन में लगभग 45 प्रतिशत है, जो यह दर्शाता है कि स्वरोजगार राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है (NITI AAYOG, India, 2020)। कोविड-19 महामारी के पश्चात उत्पन्न आर्थिक अनिश्चितता ने औपचारिक रोजगार की 'सुरक्षा की भ्रम' को तोड़ दिया है, जिससे विद्यार्थियों में आत्म-निर्भर आर्थिक मॉडल की तलाश बढ़ी है (Alam et al., 2021)। शैक्षिक दृष्टिकोण से, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमी यह है कि वह विद्यार्थियों को 'सिखने वालों' के रूप में विकसित करती है, न कि 'करने वालों' या 'सृजन करने वालों' के रूप में। NEP 2020 ने इस चुनौती को पहचानते हुए व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में एकीकृत करने का सुझाव दिया है, ताकि विद्यार्थी अपनी जन्मजात प्रतिभाओं को पहचानकर आत्मनिर्भर बन सकें (Government of India, 2020)। यद्यपि यह नीति क्रांतिकारी कदम है, किंतु इसके प्रभावी कार्यान्वयन में विभिन्न स्तरों पर विलंब और प्रक्रियात्मक टालमटोल एक प्रमुख बाधा बनी हुई है (Agrawal & Bhatt, 2023)। विशेष रूप से किशोरावस्था स्तर पर, कौशल-आधारित पाठ्यक्रम घटकों के लिए पर्याप्त वित्तीय निवेश एवं शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी इसके प्रभावी कार्यान्वयन में एक सतत चुनौती बनी हुई है (Kumar et al., 2026)। अतः, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक तीनों परिप्रेक्ष्य मिलकर विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक स्वावलंबन को एक अपरिहार्य आवश्यकता बनाते हैं।

आकृति 2. व्यावसायिक स्वावलंबन की बहुआयामी आवश्यकता

व्यावसायिक स्वावलंबन के विकास में विद्यालय,

परिवार एवं समाज की भूमिका

व्यावसायिक स्वावलंबन के विकास में विद्यालय, परिवार एवं समाज तीनों की भूमिका परस्पर संबद्ध और अनूठी है। विद्यालयों की भूमिका इस विमर्श में सर्वाधिक निर्णायक है क्योंकि ये विद्यार्थियों के औपचारिक शिक्षण का प्राथमिक केंद्र हैं। शोध दर्शाते हैं कि जब विद्यालय उद्यमशीलता शिक्षा को पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में अपनाते हैं, तो विद्यार्थियों में व्यावसायिक आकांक्षाओं और 'आत्म-प्रभावकारिता' में सार्थक वृद्धि होती है (Saptono et al., 2021)। विद्यालय न केवल तकनीकी और व्यावसायिक कौशल प्रदान कर सकते हैं, बल्कि वे जोखिम लेने, विफलता से निपटने और रचनात्मक समस्या-समाधान जैसे मनोवैज्ञानिक गुणों को भी विकसित कर सकते हैं। व्यावहारिक प्रशिक्षण शिविर, उद्यमिता प्रतियोगिताएँ और अनुभवी उद्यमियों के साथ अंतःक्रिया कार्यक्रम विद्यार्थियों में व्यावसायिक चेतना जगाने में प्रभावी सिद्ध होते हैं। परिवार की भूमिका स्वावलंबन की यात्रा में एक प्राथमिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। जिन विद्यार्थियों के परिवारों में उद्यमशीलता का परिवेश होता है या जिनके माता-पिता स्वयं व्यवसायी होते हैं, उनमें व्यावसायिक पहचान निर्माण की प्रक्रिया अधिक सुगम और सुदृढ़ होती है (Conduah & Essiaw, 2022)। 'पारिवारिक सामाजिक पूँजी' न केवल वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराती है, बल्कि भावनात्मक और नैतिक समर्थन के माध्यम से व्यवसाय की 'कथित वांछनीयता' को भी बढ़ाती है (Edokpolor, 2020; Kumari et al., 2026)। समाज की भूमिका एक व्यापक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में कार्य करती है। सामुदायिक नेटवर्क, सहकर्मी समूह और स्थानीय उद्यमी संघ विद्यार्थियों को मार्गदर्शन, संसाधन साझाकरण और भावनात्मक प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक नैतिकता भी उद्यमशीलता के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को आकार देते हैं; जहाँ कुछ सांस्कृतिक ढाँचे व्यवसाय को एक 'नैतिक जिम्मेदारी' के रूप में देखते हैं, वहीं अन्य संदर्भों में इसे जोखिमपूर्ण माना जाता है। अतः, विद्यालय, परिवार एवं समाज का त्रिकोणीय समन्वय ही विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन को सुदृढ़ आधार प्रदान कर सकता है (Saibu et al., 2024)।

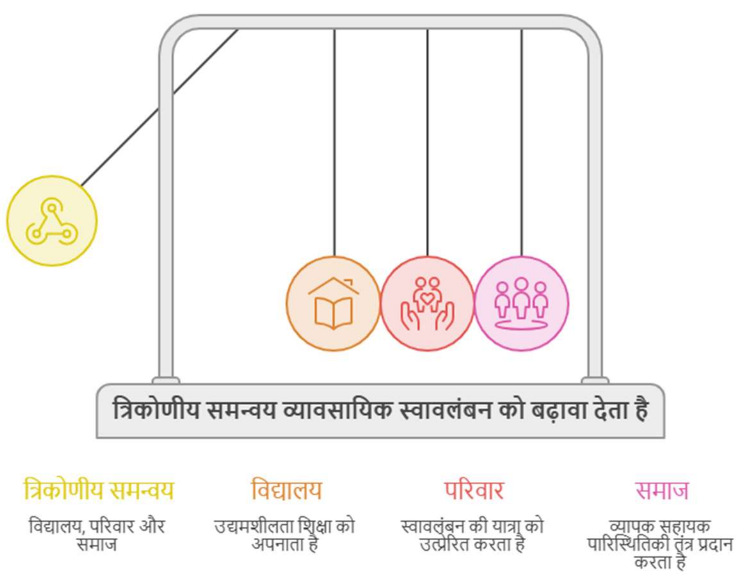

आकृति 3. त्रिकोणीय समन्वय

उद्यमिता एवं व्यावसायिक स्वावलंबन के संबंध में विद्यार्थियों के अनुभवों का अन्वेषण

उद्यमिता एवं व्यावसायिक स्वावलंबन के संबंध में विद्यार्थियों के अनुभव अत्यंत विविध और प्रभावशाली हैं। अकादमिक शोधों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों का व्यावसायिक स्वावलंबन का अनुभव एक सीमित आर्थिक गतिविधि से लेकर एक गहरी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन तक फैला हुआ है। जब विद्यार्थी पहली बार किसी व्यवसायिक उद्यम की शुरुआत करते हैं, तो वे एक जटिल भावनात्मक और संज्ञानात्मक प्रक्रिया से गुजरते हैं। प्रारंभिक चरण में उत्साह और आशावाद की भावना प्रबल होती है, किंतु जैसे-जैसे व्यावहारिक चुनौतियाँ सामने आती हैं—जैसे वित्त की व्यवस्था, बाजार में प्रतिस्पर्धा, ग्राहकों की माँग को समझना और नियामक अनुपालन—विद्यार्थी अनिश्चितता और तनाव का अनुभव करते हैं (Okon et al., 2025)। यह अनुभव उनके 'उद्यमशीलता लचीलापन' का परीक्षण करता है। जो विद्यार्थी अपनी 'आत्म-प्रभावकारिता' पर अधिक विश्वास रखते हैं, वे इन चुनौतियों को 'सीखने के अवसर' के रूप में ग्रहण करते हैं और अपनी रणनीतियों को संशोधित करते हैं (Conduah & Essiaw, 2022)। विद्यार्थियों के अनुभवों से यह भी ज्ञात होता है कि सामाजिक पूँजी—मित्रों, परिवार और सामुदायिक नेटवर्क का समर्थन—एक महत्वपूर्ण सुरक्षा तंत्र के रूप में कार्य करती है, जो जोखिम साझा करने और भावनात्मक समर्थन प्रदान कर असफलता के प्रभाव को कम करती है (Edokpolor, 2020)। कुल मिलाकर, विद्यार्थियों के अनुभव यह दर्शाते हैं कि व्यावसायिक स्वावलंबन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि व्यक्तिगत विकास, मनोवैज्ञानिक परिपक्षता और सामाजिक योगदान की एक समग्र प्रक्रिया है।

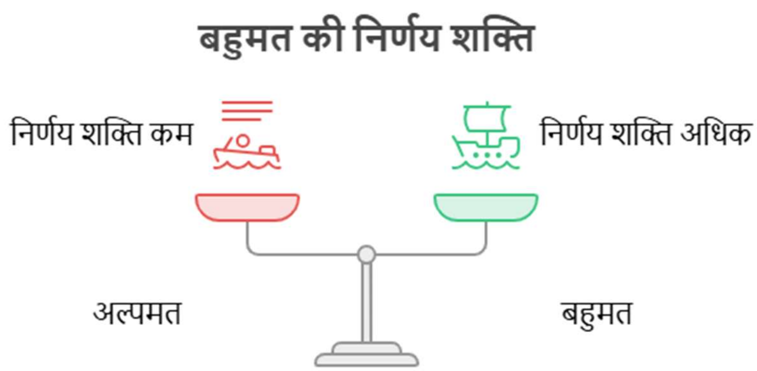

आकृति 4. बहुमत की निर्णय शक्ति

विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों एवं बाधाओं का अन्वेषण

विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ एवं बाधाएँ बहुआयामी और जटिल हैं, जो व्यक्तिगत, संस्थागत और सामाजिक-सांस्कृतिक स्तरों पर विद्यमान हैं। वित्तीय अभाव सबसे गंभीर और व्यापक बाधा है। अधिकांश विद्यार्थियों, विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि वाले, के पास व्यवसाय आरंभ करने के लिए आवश्यक पूँजी का अभाव होता है। औपचारिक बैंकिंग प्रणाली युवा उद्यमियों को ऋण देने में संकोच करती है क्योंकि उनके पास संपार्श्विक (collateral) का अभाव होता है और उनकी ऋण चुकौती क्षमता अनिश्चित होती है। भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए 'मुद्रा योजना' और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसे कार्यक्रमों ने इस समस्या को कुछ हद तक कम किया है, किंतु भूमि-स्तरीय कार्यान्वयन में भ्रष्टाचार, जटिल प्रक्रियाएँ और जागरूकता का अभाव अभी भी बाधक हैं (NITI AAYOG, 2020)। शैक्षिक बाधाएँ भी समान रूप से गंभीर हैं। अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में उद्यमशीलता शिक्षा को एक 'अतिरिक्त' या 'वैकल्पिक' विषय के रूप में देखा जाता है, न कि पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में। शिक्षकों में व्यावहारिक व्यावसायिक अनुभव का अभाव, अद्यतन पाठ्यक्रम की कमी और आधुनिक बाजार की बदलती माँग के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों में देरी इस प्रक्रिया को बाधित करती हैं (Leiva-Lugo et al., 2024)। सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं में विशेष रूप से लैंगिक असमानता एक प्रमुख चुनौती है। महिला विद्यार्थियों के मामले में पारिवारिक मानदंड, सीमित गतिशीलता, संसाधनों तक सीमित पहुँच और सामाजिक अपेक्षाएँ उनकी उद्यमशीलता की भागीदारी को बाधित करती हैं। अक्सर महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारियों और व्यावसायिक आकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाना पड़ता है, जो उनकी उद्यमशीलता यात्रा को और कठिन बनाता है। इसके अतिरिक्त, बाजार अनिश्चितता, प्रतिस्पर्धा का दबाव, नवाचार की कमी और डिजिटल सक्षमता का अभाव भी विद्यार्थियों के स्वावलंबन के मार्ग में बाधाएँ हैं। अतः, इन चुनौतियों का सामना करने के लिए एक व्यापक और बहु-आयामी रणनीति की आवश्यकता है जो व्यक्तिगत, संस्थागत और सामाजिक स्तरों पर एक साथ कार्य करे (Okon et al., 2025)।

विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन को सुदृढ़ करने हेतु व्यवहारिक एवं नीतिगत सुझाव

1. **शिक्षा नीति स्तर पर :**NEP 2020के कार्यान्वयन में तेज़ी लाई जानी चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से एकीकृत किया जाना चाहिए, न कि एक 'वैकल्पिक' विषय के रूप में। उद्यमशीलता शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही शुरू की जानी चाहिए।
2. **पाठ्यक्रम नवीनीकरण :**सैद्धांतिक शिक्षण के स्थान पर सक्षमता-आधारित शिक्षण, प्रकरण अध्ययन, सिमुलेशन अभ्यास, उद्यमी बूटकैंप और वास्तविक व्यावसायिक परियोजनाओं पर आधारित शिक्षण अपनाया जाना चाहिए। व्यवसायिक इंक्यूबेशन सेंटर, लिविंग लैब और उद्योग-शैक्षणिक सहयोग मॉडल विकसित किए जाने चाहिए।

3. **वित्तीय सहायता तंत्र :**सरकारी एवं गैर-सरकारी दोनों स्तरों पर विद्यार्थी उद्यमियों के लिए सरल, ब्याज-मुक्त या न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराए जाने चाहिए। 'मुद्रा योजना' एवं 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी योजनाओं के भूमि-स्तरीय कार्यान्वयन को पारदर्शी बनाया जाना चाहिए।
4. **लैंगिक समानता :**महिला विद्यार्थियों के लिए विशेष उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम, संरक्षण नीतियाँ और संवेदनशील पारिवारिक परामर्श कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
5. **सहायक पारिस्थितिकी तंत्र :**शैक्षणिक संस्थान, उद्योग, सरकार और समाज को एक साथ भागीदार बनाया जाना चाहिए। अनुभवी उद्यमियों को परामर्शदाता के रूप में शैक्षणिक संस्थानों से जोड़ा जाना चाहिए।
6. **डिजिटल सक्षमता :**ई-कॉमर्स, डिजिटल विपणन और तकनीक-संचालित व्यवसाय मॉडल की समझ हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
7. **असफलता के प्रति दृष्टिकोण :**विद्यार्थियों में 'असफलता अनुकरण अभ्यास' को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि वे असफलता को करियर के अंत के रूप में नहीं, बल्कि आत्म-वास्तविकीकरण की दिशा में एक सीखने की प्रक्रिया के रूप में देख सकें।

निष्कर्ष

यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्वावलंबन की आवश्यकता एवं महत्व वर्तमान वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, कोविड-19 महामारी के प्रभाव और 'कौशल-बाजार बेमेल' के कारण एक अनिवार्य विमर्श बन गया है। शोध के प्रमुख निष्कर्ष दर्शाते हैं कि व्यावसायिक स्वावलंबन विद्यार्थियों को 'नौकरी चाहने वालों' से 'रोजगार प्रदाता' में रूपांतरित करने की क्षमता रखता है, जो 'आत्मनिर्भर भारत' और समावेशी विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि विद्यालय, परिवार एवं समाज की भूमिका स्वावलंबन के विकास में निर्णायक है, जहाँ विद्यालय औपचारिक शिक्षण और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, परिवार भावनात्मक और नैतिक समर्थन देता है, और समाज एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में कार्य करता है। यद्यपि वित्तीय अभाव, शैक्षिक बाधाएँ, लैंगिक असमानता और बाजार अनिश्चितता जैसी चुनौतियाँ गंभीर हैं, तथापि NEP 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन, पाठ्यक्रम नवीनीकरण, वित्तीय सहायता तंत्र के सुदृढ़ीकरण और लैंगिक समानता पर बल देने के माध्यम से इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक स्वावलंबन न केवल एक करियर मार्ग है, बल्कि यह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत पहचान के पुनर्निर्माण, मानवीय गरिमा की प्राप्ति और राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक योगदान की एक समग्र प्रक्रिया है।

संदर्भ सूची

कुमार, पी॰, अग्रवाल, पी॰ एवं भट्ट, डी॰टी॰ (2026). किशोर विद्यार्थियों में रोजगारोन्मुख शिक्षा के संवर्द्धन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका. शिक्षा शोध मंथन, 12(01), 198-207. https://doi.org/10.5281/zenodo.21077778

Agrawal, P. & Bhatt, T. (2023). Procrastination in implementation of NEP 2020. International Journal of Novel Research and Development (IJNRD), 8(5), i336-i342. https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2305844.pdf

Alam, A., Khan, A., Ghosal, N., & Satpati, L. (2021). A review of resource management and self-reliance for sustainable development of India under COVID-19 scenario. Journal of Public Affairs, 21(4), e2725. https://doi.org/10.1002/pa.2725

Araoye, A., Adeleke, A.F., Megbuwawon, A.F. & Ayoola, Y.O. (2024). Digital Entrepreneurial Skills: A Tool to Equip and Promote Self-Reliance Among Students in Colleges of Education, Oyo State, Nigeria. International Journal of Entrepreneurship, Technology and Innovation (IJETI), 1(1), 235-250. https://ijeti.uniben.edu/wp-content/uploads/2024/08/INTERNATIONAL-JOURNAL-OF-ENTREPRENEURSHIP-IJETI-VOL.1-NO.1-JUNE-2024_060227-255-274-1.pdf

Conduah, A. K., & Essiaw, M. N. (2022). Resilience and entrepreneurship: A systematic review. F1000Research, 11, 348. https://doi.org/10.12688/f1000research.75473.1

Edokpolor, J. E. (2020). Entrepreneurship education and sustainable development: Mediating role of entrepreneurial skills. Asia Pacific Journal of Innovation and Entrepreneurship, 14(3), 329-339. https://doi.org/10.1108/APJIE-03-2020-0036

Government of India. (2020). National Education Policy 2020 (NEP 2020, pp. 1-66) [Education Policy]. Ministry of Human Resource Development. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Grudens-Schuck, N., Allen, W., Hargrove, T.M. & Kilvington, M. (2003). Renovating dependency and self-reliance for participatory sustainable development. Agriculture and Human Values, 20, 53-64. https://doi.org/10.1023/A:1022412623083

Kumar, R.B., Raju, D.R.K. & Singh, P.K. (2026). The Role of Education and Training in Developing Entrepreneurial Skills: Empirical Evidence from Vaishali District, Bihar. International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), 8(1), 1-7. https://doi.org/10.36948/ijfmr.2026.v08i01.66476

Kumari, S., Ahmad, S. & Agrawal, P. (2026). विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक स्वावलंबन का विमर्शः आकांक्षा, जोखिम एवं पहचान निर्माण, Shibli National Academic Journal, 1(1), 103-114. https://doi.org/10.5281/zenodo.21549176

Leiva-Lugo, L., Alvarez-Icaza, I., Lopez-Hernandez, F.J. and Miranda, J. (2024). Entrepreneurial thinking and Education 4.0 in communities with development gaps: an approach through the Sustainable Development Goals. Frontiers in Education, 9:1377709. doi: 10.3389/feduc.2024.1377709

Magasi, C. (2022). The influence of entrepreneurship education on entrepreneurial intentions: Perception of higher business education graduates. International Journal of Research in Business and Social Science (2147-4478), 11(2), 371-380. https://doi.org/10.20525/ijrbs.v11i2.1701

NITI AAYOG, India. (2020). Powering Aatmanirbhar Bharat through Innovation and Entrepreneurship. https://niti.gov.in/powering-aatmanirbhar-bharat-through-innovation-and-entrepreneurship

Odor, I.L. & Nwalado, S.H. (2026). Vocational Education for Self-Reliance for University Undergraduates Using Students' Industrial Work Experience Scheme as Instrument. International Journal of Education Effectiveness Research, 10(8), 65-75. https://doi.org/10.70382/hijeer.v010i8.042

Okon, E. E., Udo, U. E., Ekpor, J. J., Michael, V. E., Bassey, I. N., Tong, E. J., Njong, N. C., Patrick, G. N., Ozokwelu, B. E., Njan, G. O., & Okoh, T. J. (2025). Entrepreneurship Competencies and Self Reliance Motive Among Business Education Undergraduates in Public Universities in Cross River State. In Review. https://doi.org/10.21203/rs.3.rs-7684306/v1

Saibu, S.O., Ogunmade, T.O., Oginni, A.M. & Olude, A.S. (2024). Exploring Students' Perceptions on Integration of Entrepreneurial-Motivated-Approach in Contextual Teaching and Learning of Senior Secondary Chemistry: A Note for Education Stakeholders. International Journal of Educational Perspectives, 12(1), 1-13. https://educationalperspectives.org.ng/upload_file/111%20Saibu%20et%20al%202024.pdf

Saptono, A., Wibowo, A., Widyastuti, U., Narmaditya, B. S., & Yanto, H. (2021). Entrepreneurial self-efficacy among elementary students: The role of entrepreneurship education. Heliyon, 7(9), e07995. https://doi.org/10.1016/j.heliyon.2021.e07995

Sinha, R. & Ahmad, S. (2007). A Comparative Study of Academic Achievement, Motivation of Aided and Private Higher Secondary Students. Indian Journal of Educational Research, 26(1), 37-41.

https://www.researchgate.net/publication/400856542_A_Comparative_study_of_Academic_Achievement_Motivation_of_Aided_Private_Higher_Secondary_Students